# जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

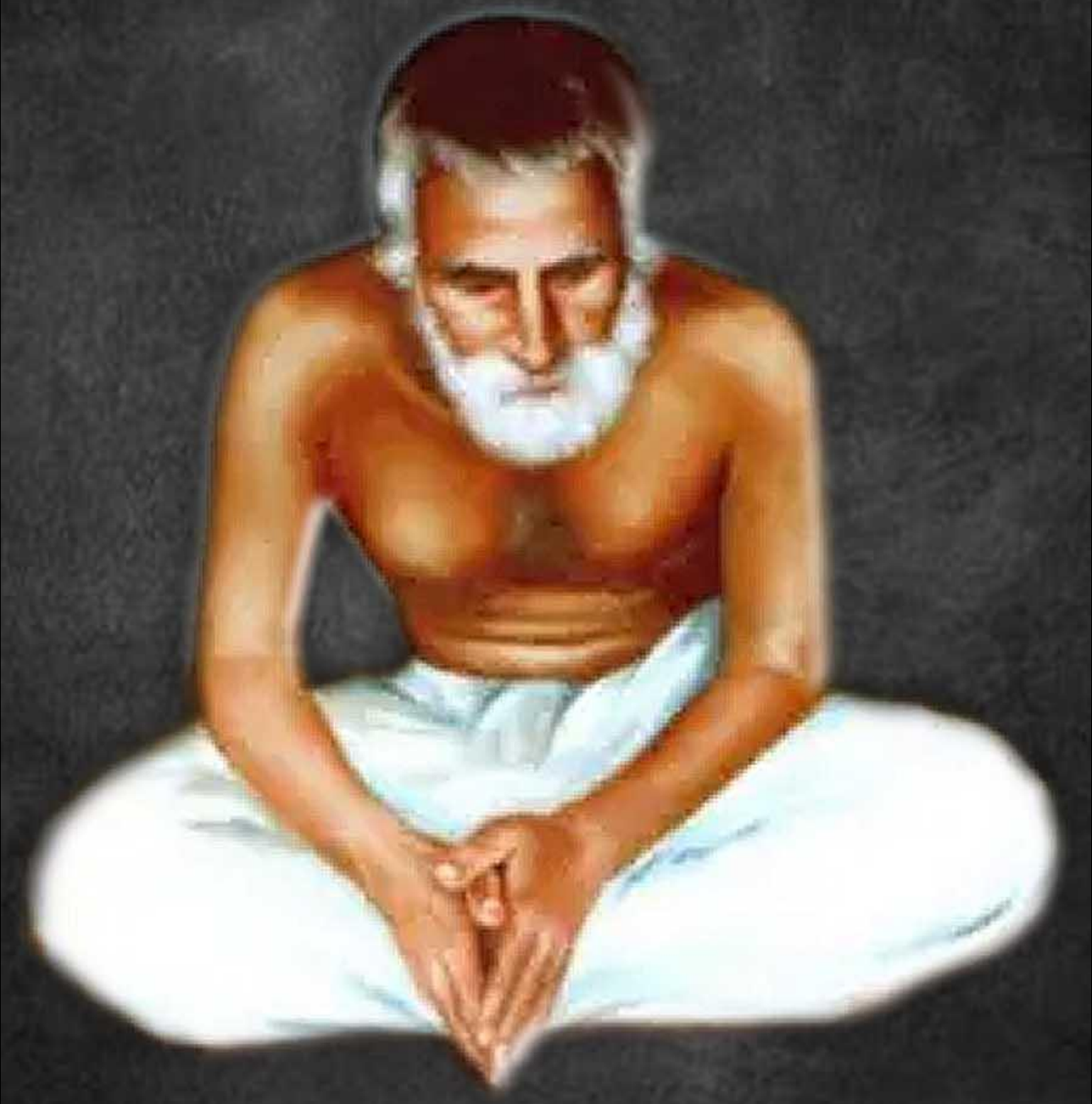

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

# 47

# गौर - जन्मस्थान

श्रीलगुरुदेव

किसी एक व्यक्ति ने नवद्वीप के बड़े अखाड़े के नाट्य मन्दिर (सत्संग भवन) के दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थित एक नीम वृक्ष के नीचे "धूलट के मेले' (गौरजन्मोत्सव) के उपलक्ष्य में एक के टीन का छप्पर बनाकर उस झोंपड़ी में बाल - गौरविग्रह की स्थापना की। वे सभी जगह इस बात का प्रचार करने लगे कि यह नीम - तला ही महाप्रभु जी का जन्म स्थान है। लुप्त- तीर्थ स्थान को पुनः

स्थापित करने के लिए सभी से धन के लिए याचना कर यात्रियों से यह व्यक्ति धन इकट्ठा करने लगा। और तो और श्रील वंशीदास बाबाजी महाराज 'सिद्ध वैष्णव' के रूप में प्रसिद्ध हैं इसलिए उन्हें इस स्थान पर ले आया। श्री श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज इस स्थान को श्रीमन् महाप्रभु जी के जन्म स्थान के रूप में स्वीकार कर लें, इसलिए उन्हें समझाने की कोशिश करने लगा कि यह स्थान ही वास्तविक नवद्वीप में स्थित श्रीमायापुर है, यह उसे श्रीमन् महाप्रभु ने स्वप्न में बताया था। वर्तमान नवद्वीप के पूर्व तट पर जो स्थान महाप्रभु का जन्म

स्थान, मायापुर के नाम से प्रसिद्ध है, उसकी अपेक्षा उस व्यक्ति का स्थान अधिक प्रामाणिक है क्योंकि, इस स्थान पर वणिकपाड़ा, शांरवारीपाड़ा, मालंचपाड़ा आदि पल्लियाँ अभी भी प्रसिद्ध हैं। श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने कहा—"जिन सब - महाजनों ने अपने भजन के बल से महाप्रभु के जन्म स्थान को प्रकाशित किया है, उनकी बात ही यथार्थ रूप से प्रामाणिक है। केवल स्वप्न के द्वारा लुप्त - तीर्थ और महाप्रभु का स्थान प्रकाशित नहीं होता। जिनके समक्ष तीर्थ प्रकाशित होते हैं, वे कभी भी अर्थ प्राप्ति के उद्देश्य से तीर्थ

प्रकाशित नहीं करते; श्रीमन् महाप्रभु के निजजन, उनके अपने प्रियजन, पार्षद ही महाप्रभु के स्थान को प्रकाशित कर के सकते हैं, अन्य और किसी की शक्ति नहीं है। ज्ञान और विचार की शक्ति से पूर्ण शंकर रूपी — श्री अद्वैताचार्य जी ने जिस प्रकार श्रीमन् महाप्रभु को जगत में प्रकाशित किया, उसी प्रकार ॐ विष्णुपाद श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज और ठाकुर श्रील भक्तिविनोद ने ही महाप्रभु के वास्तविक जन्म स्थान को प्रकाशित किया है। " श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने जिस दिन यह बात कही, उसके अगले दिन श्रील

वंशीदास बाबाजी महाराज हाथ में एक कटारी लेकर इस काल्पनिक जन्म स्थान का प्रचार करने वाले व्यक्ति के छप्पर के घेरे को काटने लगे, अर्थात् महाजनों का अवैध अनुकरण करके इस कपटी व्यक्ति ने ऐसा कार्य किया है — यह सभी को दिखा दिया।

श्रीलगुरुदेव